① विवेकानन्द

नरेन्द्रनाथ का जन्म 1863 में कलकत्ता में हुआ था। वे बौद्धिक क्षमताओं से परिपूर्ण, प्रतिभाशाली एवं मेधावी छात्र थे। आधुनिक भारत में विविध सुधारों के माध्यम से नये समाज के निर्माताओं में जिस तरह राजा राममोहन राय और दयानन्द सरस्वती की भूमिका थी, स्वामी विवेकानन्द की भी भूमिका महत्वपूर्ण है। धार्मिक क्षेत्र में विवेकानन्द ने नव-वेदान्तवाद का प्रतिपादन करके भारतीय पुनर्जागरण के आन्दोलन को आगे बढ़ाया। केवल भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी उन्होंने भारतीय आध्यात्मिकता की श्रेष्ठता का प्रचार किया।

भारत के प्राचीन धर्म एवं परम्पराओं में उनकी श्रद्धा थी। ईश्वर क्या है? इसकी खोज में वे पहले रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा बाद में रामकृष्ण परमहंस के शिष्य बने। भारत के दार्शनिक ज्ञान एवं नव-वेदान्त के प्रचार-प्रसार का कार्य किए। इसी उद्देश्य से वे शिकागो के विश्व धर्म संसद में भाग लेने भी पहुंचे। यहाँ उन्होंने हिन्दू दर्शन, आध्यात्म एवं धर्म की महत्ता का संदेश पहुंचाया।

विवेकानन्द का उद्देश्य था, हिन्दूवाद के सामान्य आधारों की खोज करना तथा उनके राष्ट्रीय चेतना जागृत करना। उनके उपदेशों का सार भी यही था। उन्होंने हिन्दूवाद के सामान्य आधारों को नव-वेदान्तवाद में पाया और तत्व के आधार पर उन्होंने राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत किया। विवेकानन्द ने नव-वेदान्तवाद की व्याख्या करते हुए स्पष्ट किया मनुष्य की वास्तविक प्रकृति ईश्वरीय है उसकी आत्मा में ब्रह्म निवास करता है। विवेकानन्द जी के दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विचारों का स्रोत वेदान्त की महान मान्यताएँ हैं। यह मनुष्य के दैनिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के नियमन एवं संचालन का पथ-प्रदर्शक दर्शन है। विवेकानन्द जी की धर्म की धारणा बुद्धिवादी एवं वैज्ञानिक है। उनकी धारणा है कि धर्म मनुष्य के आध्यात्मिक जीवन की उन्नति एवं सामाजिक एकता का आवश्यक तत्व है। धर्म और भारत की अभिन्नता का वर्णन करते हुए वे स्वीकार करते हैं कि भारत में हिन्दू धर्म में विकृतियाँ उत्पन्न हो गई हैं जिसे राष्ट्रीय एवं वैयक्तिक हित में दूर करना आवश्यक है। उनका मानना था कि प्रज्ञा (wisdom) भारत से ही अन्य देशों में पहुँचा।

पुनः विवेकानन्द भारत के पुनर्जागरण हेतु सामाजिक सुधारों को भी आवश्यक मानते हैं। वे भारत में जाति-पाँति, छुआछूत तथा सम्प्रदायवाद जैसी बुराईयों को सुधारना चाहते थे। अस्पृश्यता को भारत की सामाजिक दुर्बलता का मूल कारण बताया। इससे भारत में सामाजिक समरसता विलुप्त होती गई। विवेकानन्द के समाज-सुधार की योजना में दलितों एवं हरिजनों के उत्थान की कामना की। ब्राह्मणवाद - पुरोहितवाद की आलोचना करते हुए उन्होंने इसमें सुधार के उपाय भी बताए। निम्न वर्ग के उत्थान में विवेकानन्द की गहरी आस्था थी। उनका मानना था कि निम्न वर्ग का उत्थान करके ही समाज में एकता तथा समरसता लाया जा सकता है।

विवेकानन्द मूलतः कोई राजनीतिक दार्शनिक अथवा सिद्धान्तकार

SRM

जहाँ, एक मूलतः एक सन्यासी साधु थे। भारतीय दर्शन एवं धर्म में आई विकृतियाँ एवं परतन्त्रता से व्याप्त हीन भावना से लोगों का पतन हो रहा था। लोगों के उत्थान के लिए उन्होंने जो ~~आर्थिक~~ सामाजिक ~~धार्मिक~~ पक्ष प्रस्तुत किया वो भी राजनीतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष था। उन्होंने राजनीतिक जीवन में सुधार के लिए तथा लोगों के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किया। जहाँ अन्य लोगों ने राष्ट्रवाद के लिए राजनीतिक क्षेत्र में कार्य किया वहीं विवेकानन्द ने धार्मिक क्षेत्र में योगदान दिया। उन्होंने राष्ट्रवाद के धार्मिक आधार एवं प्रजातीय चेतना को दृढ़ किया। उन्होंने भारत माता का चित्रण दुर्गा के रूप में किया। उन्होंने राजनीतिक धारणाओं का राष्ट्रवाद की धारणा को आध्यात्मवादी वैचारिक रूप प्रदान किया। ~~व~~ वास्तव में विवेकानन्द जी ने धर्म को ही भारतीय 'राष्ट्रवाद की आत्मा' माना तथा। विवेकानन्द जी का राष्ट्रवाद आध्यात्मिक था ना कि कट्टरवादी।

विवेकानन्द का मानना था कि भारतीय अपना आध्यात्मिक अस्तित्व भूल चुका है और यही वजह है कि वे आज पतित है। तिलक की भाँति वे भी मानते थे कि राष्ट्रीय गौरव को पुनः जाग्रत करने की आवश्यकता है। उन्होंने भारतीय को निर्भिकता तथा साहस का संदेश देते हुए भारतीय धर्म का गर्व महसूस कराया। चूंकि राष्ट्रीयता की अवधारणा जातीय एवं सांस्कृतिक एकता के तत्वों पर आधारित होता है अतः विवेकानन्द जी ने भारतीयों को अपनी इस गौरव को पहचानने का संदेश दिया। वास्तव में विवेकानन्द जी ने राष्ट्रीयता की धारणा की भारतीय स्वधर्म व्याख्या की तथा भारतीयता की भावना को जाग्रत करने का आह्वान किया।

विवेकानन्द जी का कहना था कि अशिक्षा एवं ~~आर्थिक~~ दरिद्रता ही भारतीयों की दुर्दशा का मूल कारण है। वे भारतीयों की दरिद्रता से अत्यधिक व्यथित थे। वे दरिद्रता को राष्ट्रीय पाप मानते थे। इस दरिद्रता को दूर करने के ~~के~~ लिए वे शिक्षा को अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते थे। लोगों का मानना था कि विवेकानन्द एक 'समाजवादी' विचारक थे। जिन्होंने भविष्य में सर्वहारा वर्ग की संस्कृति के उत्थान की बात की किन्तु, उन्हें समाजवादी कहना भी सही नहीं क्योंकि उन्होंने कहीं भी उत्पादन के साधन पर ~~सार्व~~ सामाजिक स्वामित्व की बात नहीं की। ~~हालांकि~~ उन्होंने जनसमूह के आर्थिक उत्थान की कल्पना अवश्य की थी। ~~इन्हें~~ उन्होंने व्यक्ति के स्वतंत्रता का भी समर्थन किया। उनका मानना था कि मानव ~~का~~ जीवन स्वतंत्रता की खोज का ही इतिहास है। वह स्वतंत्रता को मनुष्य का नैसर्गिक अधिकार मानते थे।

~~व्यक्ति के विकास~~

(3)

व्यक्ति का विकास इसके बिना असम्भव है। व्यक्ति का विकास और समाज के विकास के लिए आवश्यक है। उनका विचार अभिनव भारत के निर्माण में सहायक था। उनके विचारों का तत्कालीन प्रभाव भारत में पुनर्जागरण पर पड़ा क्योंकि धार्मिक, तत्वमीमांसीय, सामाजिक एवं राजनैतिक विचारों ने देश में जागरूकता पैदा की। जे. एन. फरक्यूहर जैसे आलोचकों ने भी विवेकानन्द को नवीन भारत को सकारात्मक रूप प्रदान करने में सहायक माना। यही कारण है कि उन्हें स्वामी जी 'बंगाल की क्रान्ति का रूसो' कहा गया है।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में जिस धार्मिक राष्ट्रवाद का विकास हो रहा था उस पर विवेकानन्द के भारतीय धर्म दर्शन की श्रेष्ठता के विचारों का स्पष्ट प्रभाव था। स्वदेशी आन्दोलन हो या 1905 का बंगाल विभाजन के फलस्वरूप उत्पन्न आन्दोलन उनके विचारों का स्पष्ट मलिक था।

जहाँ राजा राममोहन राय ने पुनर्जागरण की नवीन धारा को प्रवाहित किया, दयानन्द सरस्वती ने भारत की आर्य संस्कृति की गौरव को उभारा वहीं विवेकानन्द ने वेदान्त को पाश्चात्य देशों तक पहुँचाया। इन्होंने भारतीय सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन की परम्परा को आगे बढ़ाया।

—x—